हर गुरुवार को दरिद्र नापित के गंगाजल से धुले उस्तरे दुबारा सिर घुटाने लगी। लेखिका चुप रही क्योंकि उन्हें पता था कि कुछ भी पूछने पर भक्तिन अपनी बात ही ऊपर रखेगी।

6- भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई?

उत्तर- भक्तिन देहाती परिवेश में रची-बसी थी। अतः शहर आने के बाद भी अपनी परंपराओं में दृढ़ भक्तिन अपनी आदतों को छोड़ने के लिए कतई तैयार नहीं थी अपितु उसने महादेवी वर्मा को ही अधिक देहाती बना डाला।

देहाती खाने की विशेषताएँ बता-बताकर उन्हें वैसा ही खाने की आदत डलवा दी। उसने बताया कि रात में बनी दलिया सुबह मट्ठे से सोंधा लगता है। बाजरे में तिल लगाकर बनाए गए पुए बहुत स्वादिष्ट लगते हैं। ज्वार और भुट्ठे के हरे-हरे दानों की खिचड़ी बहुत स्वादिष्ट लगती है। ऐसी अनेक प्रकार की दलीलें वे दिया करती थी। उसने अनेक ऐसी किवदंतियाँ लेखिका को कंठस्थ करवा दिया किंतु स्वयं शिष्टाचार के सामान्य नियम को भी नहीं सीख पाई। अतः भक्तिन के आने से लेखिका देहातिन बन गई।

पाठ के आस-पास

1- 'आलो-आँधारि' की नायिका और लेखिका बेबी हालदार और भक्तिन के व्यक्तित्व में आप क्या समानता देखते हैं?

उत्तर- आलो-आँधारि की नायिका एक घरेलू नौकरानी है। भक्तिन भी लेखिका के घर में नौकरी करती है। दोनों में यही समानता है। दोनों ही घर में पीड़ित हैं। दोनों ने अपने आत्मसम्मान को बचाते हुए अपना जीवन व्यतीत किया।